

परमात्मा ऊर्जा



निरन्तर देह का भान भूल जाए- उसके लिए हरेक यथा शक्ति नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार मेहनत कर रहे हैं। पढ़ाई का लक्ष्य ही है देह अभिमान से न्यारे हो देही अभिमान बनना। देह अभिमान से छूटने के लिए मुख्य युक्ति यह है सदा अपने स्वमान में रहो तो देह अभिमान मिटता जायेगा। स्वमान में स्व का भान भी रहता है अर्थात् आत्मा का भान। स्वमान- मैं कौन हूँ! अपने इस संगमयुग के और भविष्य के भी अनेक प्रकार के स्वमान जो समय प्रति समय अनुभव कराये गये हैं, उनमें से अगर कोई भी स्वमान में स्थित रहें तो देह अभिमान मिटता जाए। मैं ऊंच ते ऊंच ब्राह्मण हूँ- यह भी स्वमान है। सारे विश्व के अन्दर ब्राह्मण और विश्व का मालिक बनने वाली मैं आत्मा हूँ- यह भी स्वमान है। जैसे आप लोगों को शुरू-शुरू में देह के भान से परे होने का लक्ष्य रहता था, मैं आत्मा पुरुष हूँ- इस पुरुष के स्वभाव में स्थित कराने से स्त्रीपन का भान नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार निकलता गया। ऐसे ही सदैव अपनी बुद्धि के अन्दर वर्तमान व भविष्य स्वमान की स्मृति रहे तो देह अभिमान नहीं रहेगा। सिर्फ शब्द चेंच होने से स्वमान से स्वभाव भी अच्छा हो जाता है। स्वभाव का टक्कर होता ही तब है जब

एक दो को स्व का भान नहीं रहता। तो स्वमान अर्थात् स्व का मान, उससे एक तो देह अभिमान समाप्त हो जाता है और स्वभाव में नहीं आयेगे। साथ-साथ जो स्वमान में स्थित होता है उनको स्वतः ही मान भी मिलता है। आजकल दुनिया में मान से स्वमान मिलता है ना। कोई प्रेजिडेंट है, उनका मान बड़ा होने के कारण स्वमान भी ऐसा मिलता है ना! स्वमान से ही विश्व का महाराजन बनेंगे और उनको विश्व सम्मान देंगे। तो सिर्फ अपने स्वमान में स्थित होने से सर्व प्राप्ति हो सकती है। इस स्वमान में स्थित वह रह सकता है जिनको, जो अनेक प्रकार के स्वमान सुनाये, उसका अनुभव होगा। "मैं शिव शक्ति हूँ" - यह भी स्वमान है। एक होता है सुनना, एक होता है उस स्वमान स्वरूप का अनुभव। तो अनुभव के आधार पर एक सेकण्ड में देह अभिमान से स्वमान में स्थित हो जायेंगे। जो अनुभवीमूर्त नहीं हैं, सिर्फ सुनकर के अभ्यास करते ही रहते हैं। लेकिन अनुभवी अब तक नहीं बने हैं, उन्हीं की स्टेज ऐसे ही होती है। एक अपने स्वमान की लिस्ट निकालो तो लिस्ट बड़ी है। उन एक-एक बात को लेकर अनुभव करते जाओ तो माया की छोटी-छोटी बातों में कमजोर नहीं बनेंगे।

कथा सरिता

अवसर मिलने पर वे विवेकानंद के पास आये

और उनसे नम्रतापूर्वक पूछा- आपने

एक बार स्वामी विवेकानंद रेल से कहीं जा रहे थे। वह जिस डिब्बे में सफर कर रहे थे, उसी डिब्बे में कुछ अंग्रेज यात्री भी थे। उन अंग्रेजों को साधुओं से बहुत चिड़ थी। वे साधुओं की भर-पेट निंदा कर रहे थे। साथ वाले साधु यात्री को भी गाली दे रहे थे। उनकी सोच थी कि चूँकि साधु अंग्रेजी नहीं जानते, इसलिए उन अंग्रेजों की बातों को नहीं समझ रहे होंगे। इसलिए उन अंग्रेजों ने आपसी बातचीत में साधुओं को कई बार भला-बुरा कहा। हालाँकि उन दिनों की हकीकत भी थी कि अंग्रेजी जानने वाले साधु होते भी नहीं थे।

रास्ते में एक बड़ा स्टेशन आया। उस स्टेशन पर विवेकानंद के स्वागत में हजारों लोग उपस्थित थे, जिनमें विद्वान एवं अधिकारी भी थे। यहाँ उपस्थित लोगों को सम्बोधित करने के बाद अंग्रेजी में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर स्वामी जी अंग्रेजी में ही दे रहे थे। इतनी अच्छी अंग्रेजी बोलते देखकर उन अंग्रेज यात्रियों को सांप सूंघ गया, जो रेल में उनकी बुराई कर रहे थे।

फोकस लक्ष्य पर ही हो



हम लोगों की बातें सुनी। आपने बुरा माना होगा?

स्वामी जी ने सहज शालीनता से कहा

सीख- इस कहानी से ये सीख मिलती है कि हमें सदैव अपने लक्ष्य पर फोकस करना चाहिए।

एक बार एक लार्क चिड़िया जंगल में गाना गा रही थी। तभी एक किसान उसके पास से कीड़ों से भरा एक संदूक

तुम कहाँ जा रहे हो?

किसान ने जवाब दिया कि उस संदूक में कीड़े हैं, वो बाजार में उन

मैं अपना एक पंख तोड़ कर तुम्हें दे दूँगी और उसके बदले में आप मुझे कीड़े दीजिए। इससे मुझे कीड़े नहीं तलाशने पड़ेंगे।



लेकर गुजरा। लार्क चिड़िया ने उसे रोक कर पूछा, तुम्हारे संदूक में क्या है और

कीड़ों के बदले पंख खरीदने जा रहा है। लार्क ने कहा, पंख तो मेरे पास भी हैं।

किसान ने लार्क चिड़िया को कीड़े दिए और लार्क ने उसके बदले में उसे अपना एक पंख तोड़ कर दे दिया। उसके बाद रोज यही सिलसिला चलता रहा और एक ऐसा दिन भी आया, जब लार्क के पास देने के लिए कोई पंख नहीं बचा था।

अब वह उड़ कर कीड़े तलाशने लायक नहीं रह गई, और अब वो भद्दी दिखने लगी और उसने गाना छोड़ दिया और फिर जल्दी ही वह मर गई।

सीख- यही बात हमारी जिंदगी के लिए भी है। कई बार हमें जो रास्ता आसान लगता है, वही बाद में मुश्किल साबित होता है।



भरतपुर-रूपवास(राज.)। मातृ दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए रेनु चौधरी, नायब तहसीलदार, ब्र.कु. बबोता दीदी, सेवाकेन्द्र संचालिका, श्रीमति गुड्डि बंसल, अध्यक्ष गायत्री शक्तिपीठ रूपवास, श्रीमति पुष्पा राजावत, पूर्व प्रधान रूपवास, सुरेंद्र कुमार एस के शिक्षा एवं सामाजिक विकास संस्थान भरतपुर तथा ब्र.कु. गीता बहन।



जोधपुर-सरदार नगर(राज.)। साध्वी चंदन प्रभा जनकल्याण ट्रस्ट के चंदन पार्वनाथ भगवान व चंदन पद्मावती माता के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के अंतर्गत आयोजित संत सम्मेलन कार्यक्रम में महिला बाल विकास राज्यमंत्री श्रीमति संगीता जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नारायण भाई, ईंदौर, ब्र.कु. रामनाथ भाई, मा.आबू व ब्र.कु. कुसुम बहन, भवानीमंडी। साथ हैं जैन संगीत सम्राट नरेंद्र वाणी गीता, मुम्बई तथा अन्य।